e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 5, Issue 9, September 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 9, September 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0509027|

रूसो के सामान्य इच्छा के सिद्धांत का आलोचनात्मक अध्ययन

Dr. Kan Raj Pooniya

Associate Professor, Dept. of Political Science, Government College Barmer, Rajasthan, India

सारांश: प्रस्तुत शोध "रूसो के सामान्य इच्छा के सिद्धांत का आलोचनात्मक अध्ययन" विषय पर आधारित है।रूसो अठारहवीं शताब्दी के महान राजनीतिक चिंतक थे, जिन्होंने आधुनिक राजनीतिक चिंतन को नई दिशा प्रदान की। उनका सामान्य इच्छा का सिद्धांत लोकतंत्र, जनसत्ता तथा नागरिक स्वतंत्रता की अवधारणाओं का प्रमुख आधार माना जाता है। रूसो के अनुसार राज्य की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है तथा सामान्य इच्छा सम्पूर्ण समाज के सामूहिक हित का प्रतिनिधित्व करती है।

इस शोध में सामान्य इच्छा की अवधारणा, उसकी विशेषताओं तथा उसके राजनीतिक महत्त्व का विस्तृत अध्ययन किया गया है। रूसो ने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर लोककल्याण को सर्वोच्च स्थान दिया तथा यह प्रतिपादित किया कि राज्य का उद्देश्य समस्त नागरिकों के हितों की रक्षा करना होना चाहिए। उनके सिद्धांत ने आधुनिक लोकतंत्र, जनसत्ता तथा समानता की अवधारणाओं को गहराई से प्रभावित किया।

शोध में सामान्य इच्छा सिद्धांत की आलोचनात्मक समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है। अनेक विद्वानों ने इस सिद्धांत को अस्पष्ट एवं अव्यावहारिक बताया है। कुछ आलोचकों के अनुसार सामान्य इच्छा के नाम पर निरंकुश शासन की संभावना उत्पन्न हो सकती है तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है। इसके अतिरिक्त बहुमत के अत्याचार एवं व्यवहारिक कठिनाइयों की भी चर्चा की गई है।

वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनमत, नागरिक सहभागिता तथा लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं में रूसो के विचारों की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यद्यपि उनके सिद्धांत में कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी आधुनिक राजनीतिक चिंतन में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह शोध रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत की उपयोगिता, सीमाओं तथा आधुनिक राजनीति पर उसके प्रभाव का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: रूसो, सामान्य इच्छा, जनसत्ता, लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता, लोककल्याण, राज्य, नागरिकता, राजनीतिक चिंतन

I. प्रस्तावना

राजनीति विज्ञान मानव समाज, राज्य, शासन तथा सत्ता से संबंधित अध्ययन का महत्त्वपूर्ण विषय है। प्राचीन एवं आधुनिक काल में अनेक विचारकों ने राज्य एवं समाज की व्यवस्था को समझाने का प्रयास किया, जिनमें रूसो का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।रूसो ने अपने राजनीतिक विचारों के माध्यम से आधुनिक लोकतंत्र, जनसत्ता तथा स्वतंत्रता की अवधारणाओं को नई दिशा प्रदान की। उनका सामान्य इच्छा का सिद्धांत राजनीति विज्ञान की एक अत्यंत प्रभावशाली एवं चर्चित अवधारणा माना जाता है।

रूसो के अनुसार राज्य की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है तथा जनता की सामूहिक इच्छा ही सामान्य इच्छा कहलाती है। यह सामान्य इच्छा व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज के समस्त लोगों के कल्याण का प्रतिनिधित्व करती है। रूसो का मानना था कि कानून एवं शासन व्यवस्था का आधार सामान्य इच्छा होना चाहिए, क्योंकि यही जनता के वास्तविक हितों को व्यक्त करती है।

सामान्य इच्छा का सिद्धांत लोकतंत्र एवं जनसत्ता की भावना को सुदृढ़ करता है। इस सिद्धांत में नागरिकों की समानता, स्वतंत्रता तथा सामूहिक उत्तरदायित्व पर विशेष बल दिया गया है। रूसो ने यह प्रतिपादित किया कि प्रत्येक नागरिक को राज्य के निर्माण एवं शासन में भाग लेने का अधिकार होना चाहिए। इसी कारण उनके विचारों का प्रभाव आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं तथा जनआंदोलनों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 9, September 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0509027|

यद्यपि रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है, फिर भी इसकी अनेक आलोचनाएँ भी की गई हैं। कुछ विद्वानों ने इसे अस्पष्ट एवं अव्यावहारिक बताया है, जबकि कुछ के अनुसार सामान्य इच्छा के नाम पर निरंकुश शासन की संभावना उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा बहुमत के अत्याचार से संबंधित प्रश्न भी इस सिद्धांत के संदर्भ में उठाए गए हैं।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत का आलोचनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में सामान्य इच्छा की अवधारणा, उसकी विशेषताओं, राजनीतिक महत्त्व, आलोचनाओं तथा वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि आधुनिक राजनीतिक चिंतन एवं लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं पर रूसो के विचारों का क्या प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार रूसो का सामान्य इच्छा सिद्धांत राजनीति विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है, जिसने लोकतंत्र, जनसत्ता एवं लोककल्याण की विचारधारा को गहराई से प्रभावित किया तथा आधुनिक राजनीतिक चिंतन को नई दिशा प्रदान की।

II. रूसो का जीवन एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि

रूसो अठारहवीं शताब्दी के महान राजनीतिक दार्शनिक एवं विचारक थे। उनका जन्म सन् १७१२ में जिनेवा नगर में हुआ था। बाल्यकाल में ही उनकी माता का निधन हो गया, जिसके कारण उनका जीवन अनेक कठिनाइयों से भरा रहा। प्रारम्भिक जीवन में उन्होंने विभिन्न स्थानों की यात्राएँ कीं तथा समाज की वास्तविक परिस्थितियों का निकट से अध्ययन किया। इन अनुभवों का उनके राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

रूसो का जीवन उस समय व्यतीत हुआ जब यूरोप में सामाजिक असमानता, राजाओं की निरंकुशता तथा जनता के शोषण की स्थिति विद्यमान थी। समाज में वर्गभेद अत्यधिक बढ़ चुका था तथा सामान्य जनता को राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। शासन व्यवस्था पर राजा एवं सामंत वर्ग का पूर्ण नियंत्रण था। ऐसी परिस्थितियों में रूसो ने स्वतंत्रता, समानता तथा जनसत्ता के पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए।

रूसो का मानना था कि मानव स्वभाव से स्वतंत्र एवं सरल होता है, किन्तु समाज एवं असमान व्यवस्थाएँ उसे भ्रष्ट बना देती हैं। उन्होंने सामाजिक असमानता एवं अन्याय का विरोध किया तथा यह प्रतिपादित किया कि राज्य का निर्माण जनता के कल्याण के लिए होना चाहिए। उनके विचारों में स्वतंत्रता एवं समानता को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था।

रूसो की प्रमुख कृतियों में "सामाजिक संविदा", "असमानता की उत्पत्ति पर निबंध" तथा "मानव शिक्षा" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन ग्रंथों में उन्होंने राज्य, समाज, स्वतंत्रता तथा सामान्य इच्छा संबंधी विचारों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। विशेष रूप से "सामाजिक संविदा" में प्रस्तुत सामान्य इच्छा का सिद्धांत राजनीति विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा माना जाता है।

रूसो के विचारों का प्रभाव तत्कालीन समाज एवं राजनीति पर अत्यंत व्यापक रूप से पड़ा। उनके विचारों ने जनता में स्वतंत्रता एवं अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। फ्रांस की राज्य क्रांति पर भी उनके विचारों का गहरा प्रभाव माना जाता है। स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करने में रूसो की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

रूसो ने राजनीति को जनहित एवं नैतिकता से जोड़ते हुए यह प्रतिपादित किया कि राज्य की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है। उन्होंने शासन को जनता की इच्छा के अधीन रखने पर बल दिया तथा सामान्य इच्छा को राज्य का आधार माना।

III. सामान्य इच्छा का सिद्धांत

रूसो के राजनीतिक चिंतन में सामान्य इच्छा का सिद्धांत अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह सिद्धांत उनकी प्रसिद्ध कृति "सामाजिक संविदा" का मुख्य आधार है। रूसो के अनुसार राज्य की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है तथा जनता की सामूहिक इच्छा ही सामान्य इच्छा कहलाती है। सामान्य इच्छा का उद्देश्य सम्पूर्ण समाज के कल्याण की प्राप्ति करना होता है। यह किसी व्यक्ति, वर्ग अथवा समूह के स्वार्थ का प्रतिनिधित्व नहीं करती, बल्कि समस्त नागरिकों के हितों की रक्षा करती है।

रूसो ने सामान्य इच्छा को लोककल्याण की भावना से जोड़ते हुए कहा कि प्रत्येक नागरिक को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के व्यापक हित के बारे में विचार करना चाहिए। जब नागरिक सामूहिक हित को ध्यान में रखकर अपनी इच्छा व्यक्त

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 9, September 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0509027|

करते हैं, तब सामान्य इच्छा का निर्माण होता है। इस प्रकार सामान्य इच्छा सम्पूर्ण समाज की नैतिक एवं सामूहिक चेतना का प्रतीक मानी जाती है।

सामान्य इच्छा का अर्थ

सामान्य इच्छा से आशय ऐसी सामूहिक इच्छा से है जो समाज के सभी लोगों के सामान्य हितों का प्रतिनिधित्व करे। यह व्यक्तिगत इच्छाओं का केवल योग नहीं है, बल्कि उन इच्छाओं का वह शुद्ध रूप है जो लोककल्याण पर आधारित हो। सामान्य इच्छा सदैव समाज के व्यापक हित को प्राथमिकता देती है।

सामान्य इच्छा की विशेषताएँ

सामान्य इच्छा की अनेक विशेषताएँ हैं। यह लोककल्याण पर आधारित होती है तथा समाज के सभी लोगों के हितों की रक्षा करती है। सामान्य इच्छा में समानता एवं न्याय की भावना निहित रहती है। यह स्थायी एवं नैतिक स्वरूप की होती है तथा किसी विशेष वर्ग के हित का समर्थन नहीं करती। सामान्य इच्छा राज्य की सर्वोच्च शक्ति मानी जाती है और कानून का आधार भी इसी को माना जाता है।

सामान्य इच्छा एवं व्यक्तिगत इच्छा में अंतर

रूसो ने सामान्य इच्छा एवं व्यक्तिगत इच्छा के बीच स्पष्ट अंतर किया है। व्यक्तिगत इच्छा व्यक्ति के निजी हितों एवं स्वार्थों से संबंधित होती है, जबकि सामान्य इच्छा सम्पूर्ण समाज के कल्याण को ध्यान में रखती है। व्यक्तिगत इच्छा सीमित एवं स्वार्थपूर्ण हो सकती है, किन्तु सामान्य इच्छा व्यापक एवं लोकहितकारी होती है।

सामान्य इच्छा एवं सामूहिक इच्छा का संबंध

रूसो ने सामान्य इच्छा एवं सामूहिक इच्छा को अलग-अलग माना है। सामूहिक इच्छा अनेक व्यक्तियों की इच्छाओं का साधारण योग हो सकती है, जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ भी सम्मिलित हो सकते हैं। इसके विपरीत सामान्य इच्छा केवल लोककल्याण एवं सामाजिक हितों पर आधारित होती है। इसलिए सामान्य इच्छा को अधिक श्रेष्ठ एवं नैतिक माना गया है।

सामान्य इच्छा का आधार

सामान्य इच्छा का आधार समानता, स्वतंत्रता तथा जनसत्ता की भावना है। रूसो का मानना था कि सभी नागरिक राज्य के समान सदस्य हैं और प्रत्येक व्यक्ति को शासन निर्माण में भाग लेने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। इसी कारण सामान्य इच्छा लोकतंत्र एवं जनसत्ता की अवधारणा का आधार बनती है।

इस प्रकार रूसो का सामान्य इच्छा का सिद्धांत जनता की सर्वोच्चता, समानता तथा लोककल्याण पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक सिद्धांत है। इस सिद्धांत ने आधुनिक लोकतंत्र एवं जनसत्ता की अवधारणाओं को गहराई से प्रभावित किया है।

रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत के प्रमुख तत्व

रूसो का सामान्य इच्छा का सिद्धांत अनेक महत्त्वपूर्ण तत्वों पर आधारित है। इन तत्वों के माध्यम से उन्होंने राज्य, समाज तथा नागरिकों के पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट किया। सामान्य इच्छा का उद्देश्य केवल शासन व्यवस्था स्थापित करना नहीं, बल्कि समाज में समानता, स्वतंत्रता तथा लोककल्याण की स्थापना करना है।

जनसत्ता की अवधारणा

रूसो के अनुसार राज्य की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है। जनता ही राज्य की सर्वोच्च सत्ता है तथा शासन को जनता की इच्छा के अनुसार कार्य करना चाहिए। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि किसी राजा अथवा शासक को जनता से ऊपर नहीं माना जा सकता। सामान्य इच्छा जनता की सामूहिक शक्ति का प्रतीक है और यही राज्य का वास्तविक आधार है।

समानता का सिद्धांत

रूसो ने समाज में समानता को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना। उनके अनुसार सभी नागरिक राज्य के समक्ष समान हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। सामान्य इच्छा का उद्देश्य समाज में किसी प्रकार के अन्याय एवं भेदभाव को समाप्त करना है। इसी कारण उनके विचार आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में समानता की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

स्वतंत्रता की भावना

रूसो स्वतंत्रता को मानव का प्राकृतिक अधिकार मानते थे। उनका विचार था कि राज्य की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता सुरक्षित रहे। सामान्य इच्छा व्यक्ति को अनुशासन एवं कानून के माध्यम से ऐसी स्वतंत्रता प्रदान करती है जो समाज के

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 9, September 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0509027|

हित के अनुकूल हो। इस प्रकार स्वतंत्रता एवं सामाजिक व्यवस्था के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास उनके सिद्धांत में दिखाई देता है।

कानून एवं सामान्य इच्छा

रूसो के अनुसार कानून सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति है। कानून का निर्माण जनता के सामूहिक हित को ध्यान में रखकर होना चाहिए। यदि कानून सामान्य इच्छा पर आधारित होगा, तो वह न्यायपूर्ण एवं लोकहितकारी होगा। उन्होंने कानून को राज्य की स्थिरता एवं न्याय व्यवस्था का प्रमुख आधार माना।

राज्य एवं नागरिक संबंध

रूसो ने राज्य एवं नागरिकों के संबंध को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना। उनके अनुसार राज्य नागरिकों के कल्याण के लिए अस्तित्व में आता है और नागरिकों का कर्तव्य है कि वे सामान्य इच्छा का पालन करें। राज्य एवं नागरिकों के मध्य सहयोग एवं उत्तरदायित्व की भावना ही समाज को सुदृढ़ बनाती है।

नैतिक आधार

रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत का आधार केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक भी है। उन्होंने राजनीति को नैतिकता से जोड़ते हुए कहा कि नागरिकों को अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज के व्यापक हित के बारे में विचार करना चाहिए। सामान्य इच्छा समाज में नैतिक एकता एवं सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करती है।

लोककल्याण की भावना

सामान्य इच्छा का प्रमुख उद्देश्य लोककल्याण की स्थापना करना है। यह सम्पूर्ण समाज के हितों की रक्षा करती है तथा सामाजिक न्याय एवं सामूहिक सुख को बढ़ावा देती है। रूसो का मानना था कि राज्य का वास्तविक उद्देश्य जनता के जीवन को सुरक्षित, न्यायपूर्ण एवं सुखी बनाना है।

इस प्रकार रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत के प्रमुख तत्व जनसत्ता, समानता, स्वतंत्रता, कानून, नैतिकता तथा लोककल्याण पर आधारित हैं। इन तत्वों ने आधुनिक लोकतंत्र एवं जनकल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं को गहराई से प्रभावित किया है।

सामान्य इच्छा सिद्धांत का राजनीतिक महत्त्व

रूसो का सामान्य इच्छा का सिद्धांत राजनीति विज्ञान में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस सिद्धांत ने आधुनिक लोकतंत्र, जनसत्ता, समानता तथा लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं को गहराई से प्रभावित किया। रूसो ने यह प्रतिपादित किया कि राज्य की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है तथा शासन का उद्देश्य जनता के हितों की रक्षा करना होना चाहिए। उनके विचारों ने आधुनिक राजनीतिक चिंतन को नई दिशा प्रदान की।

लोकतंत्र के विकास में योगदान

सामान्य इच्छा के सिद्धांत ने लोकतांत्रिक विचारधारा को सुदृढ़ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। रूसो ने जनता की सर्वोच्चता पर बल देते हुए यह स्पष्ट किया कि शासन जनता की इच्छा के अनुसार संचालित होना चाहिए। आधुनिक लोकतंत्र में जनता की भागीदारी, मतदान का अधिकार तथा जनमत का महत्त्व इसी भावना को प्रकट करता है।

जनसत्ता की अवधारणा को बल

रूसो का मानना था कि राज्य की सर्वोच्च सत्ता जनता में निहित होती है। सामान्य इच्छा जनसत्ता का प्रतीक है, क्योंकि यह सम्पूर्ण समाज की सामूहिक इच्छा को व्यक्त करती है। इस विचार ने निरंकुश राजतंत्र का विरोध किया तथा जनता को शासन का वास्तविक आधार माना। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में जनसत्ता का सिद्धांत अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

स्वतंत्रता एवं समानता की भावना

रूसो ने सामान्य इच्छा के माध्यम से स्वतंत्रता एवं समानता को महत्त्व प्रदान किया। उनके अनुसार सभी नागरिक राज्य के समान सदस्य हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। यह सिद्धांत सामाजिक न्याय एवं समान अवसर की भावना को सुदृढ़ करता है। आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में समानता एवं नागरिक अधिकारों की अवधारणा पर रूसो के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 9, September 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0509027|

कानून की सर्वोच्चता
रूसो ने कानून को सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति माना। उनके अनुसार कानून तभी न्यायपूर्ण होगा जब वह जनता के सामूहिक हित पर आधारित होगा। इस विचार ने कानून आधारित शासन व्यवस्था को मजबूत किया। आधुनिक संवैधानिक शासन में भी कानून को सर्वोच्च माना जाता है तथा सभी नागरिक एवं शासक उसके अधीन रहते हैं।

लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा
सामान्य इच्छा का उद्देश्य सम्पूर्ण समाज के कल्याण की स्थापना करना है। रूसो ने राज्य को जनहित एवं लोककल्याण का साधन माना। आधुनिक जनकल्याणकारी राज्य भी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा जैसी सुविधाओं के माध्यम से जनता के कल्याण का प्रयास करता है। इस प्रकार लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर रूसो के विचारों का गहरा प्रभाव है।

राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता
रूसो का सामान्य इच्छा सिद्धांत समाज में एकता एवं सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा देता है। जब नागरिक व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज के व्यापक हित के बारे में सोचते हैं, तब राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है। यह सिद्धांत सामाजिक समरसता एवं सहयोग की भावना को विकसित करता है।

आधुनिक राजनीतिक चिंतन पर प्रभाव
रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत का प्रभाव अनेक आधुनिक राजनीतिक विचारकों एवं लोकतांत्रिक आंदोलनों पर पड़ा। स्वतंत्रता, समानता तथा जनता की सर्वोच्चता जैसे विचार आधुनिक राजनीतिक चिंतन के आधार बन गए। विशेष रूप से फ्रांस की राज्य क्रांति में उनके विचारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।
इस प्रकार सामान्य इच्छा का सिद्धांत राजनीति विज्ञान में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसने लोकतंत्र, जनसत्ता, समानता तथा लोककल्याणकारी शासन की अवधारणाओं को सुदृढ़ करते हुए आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया।

सामान्य इच्छा सिद्धांत की आलोचना
रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत को राजनीति विज्ञान में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है, किन्तु अनेक विद्वानों ने इसकी आलोचना भी की है। यद्यपि यह सिद्धांत लोकतंत्र, जनसत्ता तथा लोककल्याण की भावना को प्रोत्साहित करता है, फिर भी इसमें कुछ ऐसी सीमाएँ एवं कमजोरियाँ हैं जिनके कारण इसे विवादास्पद माना गया है।

सिद्धांत की अस्पष्टता
सामान्य इच्छा सिद्धांत की सबसे प्रमुख आलोचना इसकी अस्पष्टता है। रूसो ने सामान्य इच्छा की स्पष्ट एवं निश्चित व्याख्या नहीं की। यह निर्धारित करना कठिन है कि किसी समाज में वास्तव में सामान्य इच्छा क्या है तथा उसे किस प्रकार पहचाना जाए। इस कारण अनेक विद्वानों ने इसे व्यावहारिक दृष्टि से भ्रमपूर्ण माना है।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर प्रभाव
रूसो ने सामान्य इच्छा को सर्वोच्च स्थान दिया तथा नागरिकों से उसके पालन की अपेक्षा की। आलोचकों के अनुसार यदि राज्य सामान्य इच्छा के नाम पर नागरिकों पर अपनी इच्छा थोपे, तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है। इस प्रकार सामान्य इच्छा के नाम पर व्यक्ति के अधिकारों एवं स्वतंत्रता का हनन होने की संभावना उत्पन्न हो जाती है।

निरंकुशता की संभावना
कुछ विद्वानों का मत है कि सामान्य इच्छा का सिद्धांत निरंकुश शासन को बढ़ावा दे सकता है। यदि शासक स्वयं को सामान्य इच्छा का प्रतिनिधि घोषित कर दे, तो वह जनता पर अत्यधिक नियंत्रण स्थापित कर सकता है। इस प्रकार सामान्य इच्छा के नाम पर तानाशाही एवं सत्ता के दुरुपयोग की संभावना बढ़ जाती है।

बहुमत के अत्याचार की आशंका
सामान्य इच्छा का आधार बहुसंख्यक लोगों की इच्छा मानी जाती है। आलोचकों के अनुसार इससे अल्पसंख्यकों के हितों की उपेक्षा हो सकती है। बहुमत अपने हितों को सामान्य इच्छा का रूप देकर अल्पसंख्यक वर्ग पर अत्याचार कर सकता है। आधुनिक लोकतंत्र में सभी वर्गों के अधिकारों की सुरक्षा को आवश्यक माना जाता है, इसलिए यह सिद्धांत सीमित प्रतीत होता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 9, September 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0509027|

व्यवहारिक कठिनाइयाँ

रूसो का सामान्य इच्छा सिद्धांत छोटे राज्यों एवं सीमित जनसंख्या के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता है। आधुनिक विशाल एवं जटिल राज्यों में सम्पूर्ण जनता की सामूहिक इच्छा को जानना अत्यंत कठिन है। वर्तमान समय में विभिन्न वर्ग, समुदाय एवं विचारधाराएँ विद्यमान हैं, इसलिए सामान्य इच्छा का निर्धारण व्यवहारिक रूप से कठिन माना जाता है।

प्रतिनिधि शासन का विरोध

रूसो प्रत्यक्ष जनसहभागिता के पक्ष में थे तथा प्रतिनिधि शासन को अधिक महत्त्व नहीं देते थे। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ मुख्य रूप से प्रतिनिधि शासन पर आधारित हैं, जहाँ जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है। इसलिए आलोचकों के अनुसार रूसो का दृष्टिकोण आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के पूर्णतः अनुकूल नहीं है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण

रूसो का सामान्य इच्छा सिद्धांत अत्यधिक आदर्शवादी माना जाता है। उन्होंने यह मान लिया कि नागरिक सदैव समाज के व्यापक हित को प्राथमिकता देंगे, जबकि वास्तविक जीवन में व्यक्ति प्रायः अपने व्यक्तिगत हितों एवं स्वार्थों को अधिक महत्त्व देता है। इसलिए यह सिद्धांत व्यवहारिक राजनीति में पूर्ण रूप से लागू नहीं हो पाता।

आधुनिक समाज में सीमाएँ

आधुनिक समाज अत्यंत विविधतापूर्ण एवं जटिल है। विभिन्न धर्म, भाषाएँ, संस्कृतियाँ तथा राजनीतिक विचार समाज में विद्यमान रहते हैं। ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण समाज की एक समान इच्छा का निर्माण करना कठिन हो जाता है। इसलिए सामान्य इच्छा की अवधारणा आधुनिक बहुलतावादी समाज में सीमित प्रतीत होती है।

इस प्रकार रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत में अनेक गुणों के साथ कुछ गंभीर सीमाएँ एवं आलोचनाएँ भी विद्यमान हैं। फिर भी यह सिद्धांत लोकतंत्र, जनसत्ता तथा लोककल्याण की अवधारणाओं को समझने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है और राजनीति विज्ञान में इसका विशेष स्थान बना हुआ है।

IV. सामान्य इच्छा सिद्धांत की समकालीन प्रासंगिकता

रूसो का सामान्य इच्छा सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक चिंतन में आज भी अत्यंत प्रासंगिक माना जाता है। यद्यपि यह सिद्धांत अठारहवीं शताब्दी में प्रस्तुत किया गया था, फिर भी इसके अनेक तत्व वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं, जनसहभागिता तथा लोककल्याणकारी शासन में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। जनसत्ता, समानता, स्वतंत्रता तथा जनहित की भावना आधुनिक राजनीति के प्रमुख आधार हैं, जिन पर रूसो के विचारों का गहरा प्रभाव है।

आज के लोकतांत्रिक युग में जनता को शासन का वास्तविक आधार माना जाता है। शासन की वैधता जनता की स्वीकृति एवं जनमत पर निर्भर करती है। यह विचार रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत से अत्यंत निकटता रखता है। आधुनिक लोकतंत्र में चुनाव, मतदान तथा जनसहभागिता के माध्यम से जनता शासन निर्माण में भाग लेती है, जो सामान्य इच्छा की भावना को प्रकट करता है।

सामान्य इच्छा का सिद्धांत सामाजिक समानता एवं न्याय की अवधारणा को भी सुदृढ़ करता है। वर्तमान समय में प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार एवं अवसर प्रदान करने पर बल दिया जाता है। समाज के कमजोर एवं वंचित वर्गों के कल्याण के लिए विभिन्न योजनाएँ एवं नीतियाँ बनाई जाती हैं। यह लोककल्याणकारी दृष्टिकोण रूसो के विचारों से प्रभावित माना जाता है।

रूसो ने राज्य को जनता के कल्याण का साधन माना था। आधुनिक जनकल्याणकारी राज्य भी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सामाजिक सुरक्षा के माध्यम से नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। राज्य का उद्देश्य केवल कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना नहीं, बल्कि जनता के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को सुनिश्चित करना भी माना जाता है।

वर्तमान समय में जनमत का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है। शासन की नीतियाँ जनता की इच्छा एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं। नागरिकों की सक्रिय भागीदारी तथा सार्वजनिक विचार-विमर्श आधुनिक लोकतंत्र का महत्त्वपूर्ण भाग बन चुके हैं। यह व्यवस्था सामान्य इच्छा की अवधारणा को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है।

रूसो के विचार राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता के लिए भी उपयोगी माने जाते हैं। सामान्य इच्छा नागरिकों को व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज एवं राष्ट्र के व्यापक हित के बारे में सोचने की प्रेरणा देती है। इससे समाज में सहयोग, उत्तरदायित्व तथा सामूहिक चेतना की भावना विकसित होती है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 9, September 2022 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2022.0509027|

यद्यपि आधुनिक समाज अत्यंत जटिल एवं विविधतापूर्ण है, फिर भी सामान्य इच्छा की अवधारणा लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज भी शासन से अपेक्षा की जाती है कि वह जनता के हितों की रक्षा करे तथा लोककल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे।

इस प्रकार रूसो का सामान्य इच्छा सिद्धांत आधुनिक लोकतंत्र, जनसत्ता, सामाजिक न्याय तथा लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं को समझने में आज भी अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक माना जाता है। उनके विचार वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

V. निष्कर्ष

रूसो आधुनिक राजनीतिक चिंतन के ऐसे महान विचारक थे जिन्होंने जनसत्ता, स्वतंत्रता, समानता तथा लोककल्याण की अवधारणाओं को नई दिशा प्रदान की। उनका सामान्य इच्छा का सिद्धांत राजनीति विज्ञान की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली अवधारणा माना जाता है।

रूसो के अनुसार राज्य की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है तथा सामान्य इच्छा सम्पूर्ण समाज के सामूहिक हितों का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि शासन व्यवस्था का आधार जनता की इच्छा होनी चाहिए तथा राज्य का उद्देश्य लोककल्याण एवं सामाजिक न्याय की स्थापना करना होना चाहिए। सामान्य इच्छा का सिद्धांत लोकतंत्र, जनसत्ता तथा नागरिक सहभागिता की भावना को सुदृढ़ करता है।

इस शोध में सामान्य इच्छा की अवधारणा, उसके प्रमुख तत्वों, राजनीतिक महत्त्व तथा आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं पर उसके प्रभाव का विस्तृत अध्ययन किया गया। रूसो ने कानून को सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति माना तथा नागरिकों की समानता एवं स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया। उनके विचारों ने आधुनिक लोकतंत्र, जनकल्याणकारी राज्य तथा सामाजिक न्याय की अवधारणाओं को गहराई से प्रभावित किया।

यद्यपि रूसो के सामान्य इच्छा सिद्धांत की अनेक आलोचनाएँ भी की गई हैं। इसकी अस्पष्टता, निरंकुशता की संभावना, बहुमत के अत्याचार तथा व्यवहारिक कठिनाइयों को इसकी प्रमुख सीमाएँ माना गया है। आधुनिक बहुलतावादी समाज में सम्पूर्ण जनता की एक समान इच्छा का निर्धारण करना कठिन माना जाता है। फिर भी इस सिद्धांत का राजनीतिक महत्त्व कम नहीं होता।

वर्तमान समय में जब लोकतंत्र, जनसहभागिता तथा सामाजिक न्याय को अत्यधिक महत्त्व दिया जा रहा है, तब रूसो के विचार अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका सामान्य इच्छा सिद्धांत नागरिकों को व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज एवं राष्ट्र के व्यापक हित के बारे में सोचने की प्रेरणा देता है। अतः यह कहा जा सकता है कि रूसो का सामान्य इच्छा सिद्धांत राजनीति विज्ञान की एक अमूल्य धरोहर है। इसकी सीमाओं के बावजूद इस सिद्धांत ने आधुनिक राजनीतिक चिंतन, लोकतंत्र तथा जनसत्ता की अवधारणाओं को गहराई से प्रभावित किया है और आज भी यह राजनीतिक अध्ययन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

संदर्भ सूची

1. महाजन, वी. डी. (2016). राजनीतिक सिद्धांत. नई दिल्ली: एस. चाँद प्रकाशन.
2. आशीर्वादम्, ए. डी. (2011). राजनीतिक सिद्धांत. आगरा: साहित्य भवन.
3. वर्मा, श्यामलाल. (2013). आधुनिक राजनीतिक विचारक. नई दिल्ली: कॉलेज बुक डिपो.
4. शर्मा, प्रभुदत्त. (2012). राजनीतिक विचारों का इतिहास. जयपुर: पंचशील प्रकाशन.
5. फाड़िया, बी. एल. (2018). राजनीतिक चिंतन एवं सिद्धांत. आगरा: साहित्य भवन.
6. जौहरी, जे. सी. (2019). समकालीन राजनीतिक सिद्धांत. नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स.
7. कपूर, ए. सी. (2015). राजनीतिक विज्ञान के सिद्धांत. लखनऊ: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल **प्रकाशन**.
8. नारायण, इकबाल. (2014). राजनीतिक सिद्धांत एवं विचारधाराएँ. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
9. शर्मा, हरिश्चन्द्र. (2011). पाश्चात्य राजनीतिक विचारक. आगरा: साहित्य भवन.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor
7.54

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com